मलयालम सिनेमा : सफलता की गाथा

- षीजा एस.

शोध सार :

भारतीय सिनेमा का एक रत्न है मलयालम सिनेमा जिसने पिछले कुछ वर्षो में उल्लेखनीय वृद्धि का अनुभव किया है। यह अनूठी शैलियों और विषयों की एक ताजा और विविध श्रेणी प्रदान करता है जिसे दर्शकों और आलोचकों को समान रूप से मोहित किया है। भारतीय सिनेमा के जीवंत चित्रपट में, मलयालम फिल्म उद्योग कलात्मक अखंडता, सामाजिक चेतना और कहानी कहने की लोकप्रियता के लिए चमकते प्रकाश स्तंभ के रूप में खड़ा है। मलयालम सिनेमा ने अपने लिए एक अद्वितीय जगह बनाई है जो मात्र मनोरंजन की सीमाओ को पार करता है। सामाजिक प्रवचन और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए शक्तिशाली उत्प्रेरक के रूप में काम करता है। मलयालम सिनेमा केरल क्षेत्र की कला और संस्कृति का एक चित्रण है। इसमें मलयालम विषय पर आधारित वास्तविक रूप-रंग की फिल्में प्रस्तुत की जाती है। बॉलीवुड फिल्मों की तुलना में मलयालम फिल्में कम बजट की है। इनमें सामाजिक संदेश और मनोरंजन है।

बीज शब्द : सिनेमा, मलयालम सिनेमा, बॉलीवुड, मनोरंजन,सामाजिक संदेश, इतिहास, केरल

शोध

सिनेमा के आगमन से बहुत पहले ही केरल के लोग पारंपरिक कला रूप “थोलपावाक्कुथु” (कठपुतली नृत्य) के माध्यम से स्क्रीन पर चलती छवियों से परिचित थे। मंदिरों के उत्सवों में प्रदर्शित होने वाले “थोलपावाक्कुथु” में लचीले जोडों वाली चमड़े की कठपुतलियों का उपयोग किया जाता है। इन जोड़ों को छडियों का उपयोग करके हिलाया जाता है और इन चलती कठपुतलियों की छाया को पीछे से प्रकाश स्त्रोत का उपयोग करके स्क्रीन पर कैद किया जाता है, जिससे स्क्रीन पर नाटकिय चलती छवियां बनती है। पौराणिक कथाओं की कहानियों को इस तरह बताया जाता था, साथ ही चेंड़ा जैसे पारंपरिक तालवद्यों के साथ संवाद और गीत भी सुनाए जाते थे। सिनेमा में व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाले कुछ तकनीकों का उपयोग ‘थोलपावाक्कुथु’ में किया जाता है।

‘थोलपावाक्कुथु’ की कला, जो सिनेमा की प्रकृति को प्रदर्शित कराती है, उसकी अलावा,’कुथु’, ‘कुडियाट्टम’ और ‘कथकली’ जैसे कई लोक कलाएँ और शास्त्रीय नृत्य रूप बहुत उच्च दृश्य गुणवत्ता प्रदर्शित करते है। केरल की दृश्य संस्कृति की यह विरासत केरल के फिल्म निर्माताओं को केवल कहानी कहने के बजाय एक अलग तरीके से सिनेमा को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

मलयालम सिनेमा भारतीय सिनेमा के क्षेत्र में एक ताकत है। इसे अब मॉलीवुड कहाँ जाता है। यह सिनेमा उद्योग एक छोटे से भौगोलिक क्षेत्र को ध्यान में रखते है और हर साला औसतन 70

फिल्में बनाता है। इसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित निर्देशक, पटकथा लेखक, तकनीशियन और बेहतरीन अभिनेता शामिल है।

मलयालम सिनेमा उद्योग को शुरुआत में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन यह अपनी पहली फिल्म ***विकटकुमारन*** के निर्माण से ही सफलता की गाथा रही है। मलयालम सिनेमा के उदय की कहानी को चार चरणों में विभाजित किया जा सकता है।

मौन युग या परेशानीयों के दशक (1928 - 1950)

मलयालम सिनेमा एक दंत चिकित्सक के अग्रणी प्रयासों के माध्यम से अस्तित्व में आया। दंत चिकित्सक, जे. सी. डैनियल ने अपने सब कुछ बेच दिया और अपनी जीवन भर की बचत खर्च करके पहली मलयालम फिल्म ***विकटकुमारन*** (द लॉस्ट चाइल्ड) बनाई, जो एक मूक फिल्म थी। शुरुआती के रूप में डैनियल, फाल्के और मुदालियर जैसे अग्रणी फिल्म निर्माताओं के कामों की प्रशंसा करते थे, लेकिन उन्होंने भक्ति फिल्म बनाने का मार्ग नहीं चुना। ***विकटकुमारन*** एक पारिवारिक नाटक था जिसने मलयालम में सामाजिक सिनेमा की शुरुआत की। इसका निर्माण, निर्देशन, लेखन, फोटोग्राफी, संपादन और अभिनय जे.सी डैनियल ने किया। उन्होंने केरल में पहला फिल्म स्टूडियो, द त्रावणकोर नेशनल पिक्चर्स स्थापित किया। ***विकटकुमारन*** मूक फिल्म थी,इसलिए थिएटर में एक उद्घोषक था जो कहानी और स्थिति के बारे में बताता था।

केरल में बनी पहली फिल्म होने और सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण संदेश देने के बावजूद, इस फिल्म में एक महिला की मौजूदगी के कारण समाज के कुछ रूढ़िवादी वर्गों के गुस्से का सामना करना पड़ा। रोज़ी, जिसने महिला नायक की भूमिका निभाई थी, को थिएटर में प्रवेश करने से रोक दिया गया था, क्योंकि उच्च जाति के हिंदुओं ने इस बात पर नाराजगी जताई थी कि एक दलित ने फिल्म में एक नायर महिला की भूमिका निभाई थी, और हंगामा मचा दिया था। इसी कारण जे.सी डैनियल के इस साहसिक कदम को कलात्मक समुदाय से न तो प्रोत्साहन मिला और न ही समर्थन।

1933 में सुंदरराज ने मलयालम के दूसरी मूक फिल्म **मार्तण्ड वर्मा** का निर्माण किया। यह सी वि रामन पिल्लई के उपन्यास **मार्तण्ड वर्मा** पर आधारित था। उपन्यास के प्रकाशक कॉपीराइट उल्लंघन का मामला दर्ज कराया। क़ानूनी विवाद के कारण निर्माता को सफल प्रदर्शनों के बाद भी फिल्म को सिनेमा हॉल से वापस लेना पड़ा। **मार्तण्ड वर्मा** के साथ मूक मलयालम सिनेमा का इतिहास भी समाप्त हो गया।

साउंड ट्रैक वाली पहली मलयालम फ़िल्म ***बालन*** 1938 में रिलीज़ हुई थी। मद्रास मलयाली एसोसिएशन के युवा फ़िल्म प्रेमियों के एक समूह ने मिलकर सलेम मॉडर्न थियेटर्स के बैनर में यह फिल्म बना। इसका निर्माता टी.आर. सुंदरम और एस. नोटानी, एक पारसी द्वारा निर्देशित है। इस

फ़िल्म को कलात्मक दृष्टि से अप्रासंगिक माना जा सकता है, लेकिन इसकी आर्थिक सफलता ने मलयालम फ़िल्म उद्योग के लिए एक आधार तैयार किया।

अपनी पहली बोलती फ़िल्म की सफलता के बाद, सलेम मॉडर्न थियेटर्स ने कई और फ़िल्में बनाईं। इन शुरुआती वर्षों में, इस नवजात उद्योग में ऐसे कलाकार और अन्य लोग थे, जिनकी जड़ें थिएटर से जुड़ी थीं। बालन की सफलता के बाद, ***ज्ञानाम्बिका*** 1940 में और ***प्रह्लाद*** 1941 में रिलीज़ हुई।

पी जे चेरियन द्वारा निर्देशित ***निर्मला*** (1948) ने मलयालम सिनेमा में संगीत और गीतों की संभावनाओं की खोज की। महान मलयालम कवि जी शंकर कुरुप ने इस फिल्म के गीत लिखे। इस प्रकार गीत-नृत्य दृश्य मलयालम सिनेमा में व्यावसायिक सफलता के लिए एक आवश्यक घटक बन गए। एक साल बाद इस उद्योग के दिग्गजों में से एक कुंचाको और कुछ दोस्तों ने आलाप्पुड़ा में उदय स्टूडियो की स्थापना की। इसके साथ निर्मित होने वालीं फिल्मों की संख्या में वृद्धि देखि गई।

अल्लेपी में कुंचाको के उदय स्टूडियो और तिरुवनंतपुरम में सुब्रमणियम के मैरीलैंड स्टूडियो की स्थापना के साथ वर्ष में एक फिल्म बनाने का अभ्यास बदल गया। 1950 में छः फिल्मों का निर्माण हुआ। पुराणों के आधार पर फिल्मों और सफल तमिल फिल्मों के मलयालम संस्करण बनाने का प्रयास किया गया था। इस अवधि में कई निर्देशकों और तकनीशियनों ने तमिल से मलयालम फिल्म उद्योग में कदम रखा।

जीवितनौका 1951 में मलयालम सिनेमा के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ था। यह अत्यधिक नाटकीय संगीतमय फिल्म था। लंबे और भारी के संवादों और तीव्र, भावनाओं से भरे दृश्यों ने दर्शकों में गहरे रूप से असर किया। यह फिल्म मुख्य रूप से महिला दर्शकों के लिए निर्देशित थी। ***जीवितनौका*** मलयालम सिनेमा की पहली सुपरहिट माना जा सकता है। यह मलयालम सिनेमा के लिए एक व्यवसायिक मंच प्रदान किया। इसका नायक तिक्कुरुश्शी सुकुमारन नायर जो नाटककार था, फिल्म की सफलता के बाद मलयालम सिनेमा के पहले 'सुपरस्टार' बन गए।

<u>सिनेमा पर साहित्य अनुकूलन का दशक (1950-1970)</u>

50 के दशक ने मलयालम साहित्य को पुनर्जीवित किया और यह मलयालम सिनेमा में भी परिलक्षित हुआ। युवा और शानदार लेखकों ने फिल्म निर्माताओ और फिल्म उद्योग के एनी लोगों के साथ सहयोग किया। ***नीलाक्कुयिल*** *(1954)* ,जिसमें अभिवाज्य कहानियों और पत्रों के साथ पहला सफल मलयालम फिल्मों की एक श्रृंखला शुरू हुई। लेखक उरूब के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित, रामू कारयाट और पी भास्करन द्वारा संयुक्त रूप से निर्देशत यह मलयालम फिल्म के इतिहास में यथार्थवाद पर आधारित पहली फिल्म थी। इस फिल्म राष्ट्रपति के रजत पदक से सम्मानित होने वाली पहली फिल्म ,जिससे मलयालम फिल्म राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिध्द हुआ।

साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनाने की प्रवृति में वृद्धि हुई। इस समय के फ़िल्मों ***पडाता पैंकिली*** (1957), ***रंडीडंगज़ी*** (1958), ***मुडियनाय पुत्रन*** (1961), ***पुतिया आकाशम पुतिया भूमी*** (1963), ***ओडायिल निन्नू*** (1965)। इसी समय अन्य प्रकार की फिल्मों भी बनाई गई। ***न्यूजपेपर बॉय*** (1955), मलयालम की पहली नवयथार्थवाद फिल्म के रूप में प्रशंसा की गई।

इसी दशक में मलयालम फिल्मों का व्यापक स्तर पर निर्माण होने लगा। जहाँ पहले तिक्कुरुशि सुकुमारन नायर, कोट्टारक्करा श्रीधरन नायर धूम मचा रहे थे वहाँ सत्यन, प्रेमनज़ीर लोकप्रिय सितारे बने। दशक के अंत तक प्रतिभाशाली अभिनेताओं का समूह था जिन्होंने उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उम्मर, मधु, पी जे एन्टनी , अडूर भासी, बहादूर, शीला, अम्बिका आदि सितारों का ताँता बँध गया।1961 में प्रथम रंगीन फिल्म ***'कण्टमवच्चा कोट्टु'*** निकली।

इस अवधि में दृश्यों के पीछे सितारों का उदय हुआ। स्क्रिप्ट लेखन, संगीत रचना, गायन आदि क्षेत्रों में प्रतिभा फिल्म उद्योग को समृद्ध करने लगा। वयलार रामवर्मा के गीतों के बोल देवराजन का संगीत और येशुदास का गाना तीनों ने मिलकर मलयाली जन रुचि को स्तरीय बनाया। फिल्मी गीत रचना, संगीत रचना एवं गायन तीनों क्षेत्रों में कलाकारों की संख्या बढ़ती चली गई। बाबूराज, के. राघवन, एम. टी. वासुदेवन नायर (***मुराप्पेन्नु,*** 1965), के. येशुदास (***कालप्पादुकल,*** 1961), ओ. एन. वी. कुरुप (***कालम मारुन्नु***, 1955)। पी. भास्करन, रामू कारयाट और ए. विंसेंट जैसे निर्देशक उत्सुक दर्शकों के लिए उच्च स्तर की फिल्में पेश कर सके, जबकि के. सेतुमाधवन, शशिकुमार, एम. कृष्णन नायर, पी. सुब्रह्मण्यम और कुंचाको व्यावसायिक सिनेमा के स्तंभ बन गए।

रामू कारयाट की '***चेम्मीन***' (1966) फिल्म ने मलयालम फिल्म के इतिहास में नया अध्याय खोला। यह फिल्म राष्ट्रपति स्वर्ण पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली दक्षिण भारतीय फिल्म बन गई और मलयालम सिनेमा को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर पहुंचा दिया। कारयाट के फिल्म से प्यार ने कोई कसर नहीं छोड़ी और सबसे अच्छे दिमाग और प्रतिभाओं को एक साथ लाया। बेहतर तकनीशियनों की उनकी टीम में फ्रांसीसी कोरियोग्राफर मार्कस बार्टले और देश के सर्वश्रेष्ठ तकनीशियन, गायक और संपादक शामिल थे।

1969 में, केरल सरकार ने मलयालम फिल्मों के लिए राज्य पुरस्कारों की स्थापना की। ***कुमारसंभवं*** साल की सर्वश्रेष्ठ फिल्म जीतने वाली पहली फिल्म बन गई। विंसेंट को फिल्म ***नदी*** के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्देशन का पुरस्कार मिला, जबकि सत्यन सर्वश्रेष्ठ अभिनेता ***(कालप्पाड़ुकल)*** और शीला अभिनेत्री (***कल्लिचेल्लम्मा)*** का पुरस्कार जीता।

मलयालम सिनेमा में लेखन, प्रदर्शन और तकनीक पर जोर

1960 के दशक में समर्पित युवाओं का एक समूह मलयालम सिनेमा की दूनिया में बहुत सक्रिय था। इन युवाओं को अत्यधिक प्रशंसित अंतराष्ट्रीय फिल्में देखने और अंतराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लेने और फिल्म संस्थानों में अध्ययन करने का अवसर मिला था।

1965 में अडूर गोपालकृष्णन ने चित्रलेखा फिल्म सोसाइटी का स्थापना की। केरल की विभिन्न शहरों में अच्छी फिल्मों के प्रदर्शन और फ़िल्मों के बारे में उत्साही चर्चाओं की सुविधा के लिए एक स्थल के रूप में अधिक फिल्म सोसायटी स्थापित की गई। इसी जागृति की पृष्ठभूमि में 70 के दशक में मलयालम सिनेमा एक नई संवेदनाशीलता से संपन्न हुआ। 1972 में, अडूर गोपालकृष्णन की फिल्म ***स्वयंवरम*** की रिलीज़ ने मलयालम फिल्म प्रेमियों को तूफान से ले लिया क्योकि यह मुख्यधारा के सिनेमा से बहुत दूर थी। ***स्वयंवरम*** ने चार राष्ट्रीय पुरस्कार जीते। 20 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ फिल्म और सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार मिला। इसकी नायिका सारदा ने सर्वश्रेष्ट अभिनेत्री का पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ छायाकार का पुरस्कार कैमरामैन मनकाडा रवि वर्मा ने जीता।

प्रसिद्ध साहित्यकार एम टी वासुदेवन नायर ने पटकथा लेखन के अभूतपूर्व प्रतिभा के साथ सिल्वर स्क्रीन की दुनिया में प्रवेश किया। उनकी फिल्म ***निर्मालयम*** ने सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार जीता और राष्ट्रीय सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार इसके मुख्य अभिनेता पी.जे एंटनी ने जीता। 1977 में अडूर गोपालकृष्णन ने दूसरी फिल्म ***कोडीयेट्टम*** रिलीज़ की जो अंतरराष्ट्रीय ध्यान खीचा। इस फिल्म में भरत गोपी को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था।

1970 के दशक में प्रमुखता से उभरे फिल्म निर्माता था जी अरविंदन। ***उत्तरायणम*** (1974), ***काचना सीता*** (1977), ***थम्बू*** (1978) और ***इस्ताप्पन*** (1979) जैसी फिल्मों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित किया। अरविंदन की फिल्में मुख्यधारा के सिनेमा से अलग थी कि उन्होंने फिल्मों के बारे में लोगों की धारणाओ को उलट दिया। इसी दशक में जॉन अब्राहम, पी एन मेनन, के जी जार्ज, के पी कुमारन, पी ए बैकर और पवित्रन जैसे प्रतिभाशाली कलाकारों का उदय हुआ। सिनेमैटोग्राफर जैसे शाजी एन करुण, मनकडा रवि वर्मा और ध्वनि संपादक देवदास जैसे विशेषज्ञों का उदय हुआ। इसी समय मलयालम फिल्म संगीत की दुनिया में पी. बी. श्रीनिवास, एम.एस विश्वनाथन, वी दक्षिणमूर्ति और एम जी राधाकृष्णन जैसे संगीत निर्देशक, के जे येसुदास, पी सुशीला,जयचंद्रन, एस जानकी, माधुरी जैसे गायक और गीतकार श्रीकुमारन थम्पी अपनी प्रतिभा से फिल्म उद्योग में सही जगह पाया। अभिनेताओं में एम जी सोमन 1973 फिल्म ***गायत्री*** के माध्यम से पहला ब्रेक मिला और सुकुमारन को फिल्म ***निर्मालयम*** के माध्यम से मिला। इसी दशक में फिल्म जगत में प्रवेश किया जगती श्रीकुमार, भरत गोपी,मुरली नेडूमुडी वेणु और के पी ए सी ललिता।

लोकप्रिय फिल्म निर्माता पद्मराजन और भरतन इस समय के आसपास फिल्म क्षेत्र में प्रवेश किया। जिन्होंने व्यावसायिक सिनेमा और कला सिनेमा के बीच विभाजन रेखा को धुंधला करने वाली फिल्में बनाई। अनुभवी निर्देशकों जोशी, हरिहरन और आई. वी शशी ने इसी दशक में फिल्म क्षेत्र में शुरुआत की।

1976 में कुचाको के भाई नवोदय अप्पचन ने काक्कनड में नवोदय स्टूडियो की स्थापना की। इस स्टूडियो में नई तकनीकों से फिल्म निर्माण करने की पूरी व्यवस्था थी। नवोदय द्वारा निर्मित दूसरी फिल्म ***तचोली अंबु*** सिनेमास्कोप एनामोर्फिक लेंस का उपयोग करके शूट किया गया पहला मलयालम फिल्म है। नवोदय का ***पडयोट्टम*** 70एमएम चौड़ी फिल्म रील पर रिकॉर्ड किए और स्थानीय रूप से संपादित किया गया भारत का पहला फिल्म है। इस समय केरल के प्रसाद लाब्स किसी भी अन्य भारतीय फिल्म उद्योग का 70 एमएम फिल्म का पोस्ट प्रोडक्शन के लिए सुसज्जित था।

<u>मलयालम सिनेमा का स्वर्ण युग (1980 - 1990)</u>

यह दशक एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधि थी। इस युग में मलयालम सिनेमा ने अपनी उच्चतम उत्पादन को दिखाया और अनेक ब्लॉकबस्टर फिल्में उत्पन्न की। इस दशक के दौरान फिल्मों की गौरवशाली निर्माण शैली, अद्वितीय कहनियों और अभिनेताओं की अद्वितीय प्रस्तुति ने मलयालम सिनेमा को एक अलग पहचान दी।

इस अवधि में रिलीज हुई ब्लॉकबस्टर फिल्में भरतन की ***राथिनिर्वेदम, तकरा, वैशाली, ओरु मिनामिनुंगिटे नुरुंगु वेट्टम***। के जी जॉर्ज की ***यवनिका, लेखायुड़े मरणम ओरु फ्लैशबैक।*** एम् टी और हरिहरन टीम के ***वलारथू मृगंगल,पंचाग्नि, नखाक्षतंगल अमृतम गमया*** और ***ओरु वडक्कन वीरगथा*** अडूर गोपालकृष्णन की ***एलिपथायम, मुखामुखम, मतिलुगल*** अरविंदन की ***पोक्कुवेयिल, चिंदबरम*** सिबी मलयाल और लोहितदास की ***थानियावार्थानम*** *और* ***किरिडम***। जॉन अब्राहम की ***अम्मा अरियान***। शाजी एन करुण की ***पिरवी***। सत्यन अंथिक्कड़ की ***टी पी बालगोपालन एम ए, नाडोडीक्काट्टू***। के मधु और एस एन स्वामी टीम की ***ओरु सी बी आई डायरी कुरिप्पू*** श्रीनिवासन ***के वडक्कुनोक्की यंतरम***।

1982 में नवोदय स्टूडियो ने भारत की पहली 3 डी फिल्म ***मई डियर कुट्टीचाथन*** का निर्माण किया। 1984 में तमिल, तेलुगु और हिंदी डब संस्करण रिलीज़ हुई। इसका पुनःसंपादित संस्करण डी टी एस साउड़ सिस्टम के साथ पहली मलयालम फिल्म 1997 में जारी किया। इन सभी योगदानों के लिए मलयालम फिल्म उद्योग ने अप्पाचन और उनके स्टूडियो को जे सी डैनियल पुरस्कार दिया।

मलयालम स्क्रीन के अधिकांश सदाबहार नायकों ने 1980 के दशक में अपनी प्रविष्टि की। इनमे ममूटी, मोहनलाल, सुरेश गोपी, तिलकन, शोभना, जयराम और उर्वशी शामिल है। उनके योगदान और प्रदेशन ने मलयालम फिल्म जगत को उंचा किया और अभिनेताओं की प्रतिभा प्रदर्शित किया।

केरल राज्य फिल्म विकास निगम ने तिरुवनंतपुरम में चित्रांजलि नामक फिल्म निर्माण स्टूडियो का स्थापना की। यह स्टूडियो 300,000 वर्गमीटर भूमि में फैला हुआ है। स्टूडियो में चार आउटडोर फिल्म यूनिट, फिल्म प्रसंस्करण प्रयोगशाला, डबिंग स्टूडियो, प्रीव्यू थिएटर, फिल्म अर्कावई और एक फिल्म संग्रहालय जोड़ा है। यह स्टूडियो एशिया में दूसरा सबसे बड़ा साउड़ प्रूफ इनडोर शूटिंग फ्लोर है। केरल सेंसर बोर्ड ऑफ़ फिल्म सर्टिफिकेशन और व्यूइंग थिएटर का हेड ऑफिस इस स्टूडियो में स्थित है।

1982 में ब्रिटिश फिल्म संस्थान ने अडूर गोपालकृष्णन की ***एलिप्पथायम*** को मूल कल्पनाशील फिल्म के लिए सम्मानित किया। यह फिल्म लंदन फिल्म फेस्टिवल में सदरलैंड ट्रोफी जीती। 1989 कैनंस फिल्म फेस्टिवल में शाजी एन करुण की ***पिरवी*** को कैमरा डी'ओर जितने वाली पहली मलयालम फिल्म है। इस फिम्ल को तीस से अधिक अंतरराष्ट्रीय मान्यताएं प्राप्त है।

1980 दशक के फ़िल्मों की सफलता का सूत्र निर्देशकों और अभिनेताओं का सहयोग। फिल्म अधिक परिवारिक हास्य और रोमांस से जुड़े उन्मुख कथानक था। मलयालम फिल्म उद्योग सुपरस्टार पर आधार नहीँ थे।

<u>हिरोस का युग (1990)</u>

1990 से कमर्शियल सिनेमा पूरी तरह सुपरस्टार्स पर निर्भर हो गया। मलयालम सिनेमा के बदलते परिदृश्य ने दर्शकों की वरीयताओं और अपेक्षाओं में बदलाव लाया। मोहनलाल और ममूटी जैसे सुपरस्टार 1980 दशक में अपने भरोसेमंद और साधारण किरदारों के लिए जाने जाते थे। 1990 ने जीवन से बड़ी भूमिकाएं निभानी शुरू कर दी, जिससे कुछ प्रशंसक उनकी छवि से ऊब गए।

इस समय के दौरान, फिल्म सोसाइटी ने मलयालम फिल्म दर्शकों को आवाज देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जनता इन सोसाइटी में सीधे तौर पर शामिल नहीँ थी लेकिन उन्होंने फिल्म उत्साही और आलोचकों को अपनी राय व्यक्त करने और मलयालम सिनेमा को जीवित रखने के लिए एक मंच पर्दान किया। यह फिल्म सोसाइटी दर्शकों के लिए मलयालम फिल्मों के बढ़ते व्यवसायीकरण और अवास्तविक प्रकृति के बारे में अपनी चिंताओ को आवाज देने का एक चैनल बन गए। दर्शकों ने फिल्म सोसाइटी का समर्थन किया। केरल सरकार ने मलयालम फिल्म उद्योग का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1992 में मलयालम में भारत की पहली लाइव- एक्शन/एनिमेशन हाइब्रिड फिल्म ***ओ फैबी*** बनाई गई थी। 1994 में इटली की बर्गामो फिल्म मीटिंग में शाजी एन करुण की फिल्म ***स्वाहम*** ने ब्रोंज़ रोजा कैमुना पदक जीता। 1997 में राजीव आँचल निर्देशित ***गुरु*** ऑस्कर नामांकन मिले पहली मलयालम फिल्म है। यह ऑस्कर के सर्वश्रेष्ठ विदेशी फिल्म वर्ग में आधिकारिक प्रविष्टि मिले पहली भारतीय

फिल्म है। 1999 में मुरली नायर की ***मरणा सिंहासनं*** और शाजी एन करुण की ***वानाप्रस्थं*** ने कैनंस फिल्म फेस्टिवल में कैमरा डी'ओर जीता।

स्वर्ण युग के बाद की फिल्मों में बेहतरीन कहानियाँ थी फिर भी उनमे ताजगी का अभाव था। सिबी मलायिल की ***भरतम,*** प्रियदर्शन की ***कालापानी,*** फाजिल की ***मनिचित्रथाज्यु*** , भद्रन की ***स्पडीकम*** ,जयराज की ***देशाडनं*** इस समय की हिट फिल्म थी।

केरल सरकार के सांस्कृतिक विभाग ने 1998 में केरल राज्य चलचित्र अकादमी (मोशन पिक्चर अकादमी ऑफ़ केरला स्टेट) की स्थापना की। यह राज्य में सिनेमा को बढ़ावा देने के लिए किया था। भारत में यह पहला अकादमी है। इस में सार्वजनिक के लिए फिल्म और वीडियो आर्काइव, एक ऑडियो विजुअल लाइब्रेरी, फिल्म आधारित अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए अकादमिक पुस्तकालय, एक मंच, एक प्रेक्षागृह, फिल्म फेस्टिवल को मेजबानी के लिए थिएटर, मलयालम सिनेमा के इतिहास को अंकित करने के लिए एक प्रलेखन सेल और फिल्म से संबंधित व्यक्तित्वों का विवरण।

असोसिएशन ऑफ़ मलयालम मूवि आर्टिस्ट -अम्मा

अम्मा एक संगठन है जो मलयालम फिल्म उद्योग के कलाकारों और तकनीशियनों का प्रतिनिधित्व करता है। इसका स्थापना 1994 में हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य अपने सदस्यों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सुरक्षा को सुनिश्चित करता है। 2008 में असोसिएशन ऑफ़ मलयालम मूवि आर्टिस्ट की सभी कलाकारों को उपस्थित करके मलयालम फिल्म उद्योग ने भारत की सबा से बड़ी बहुस्टार फिल्म ***ट्वेंटी-20*** बनाई। इसका निर्देशन जोशी और निर्माता अभिनेता दिलीप है। इस में कलाकारों ने बिना भुगतान से काम किया। यह अम्मा के असहायक कलाकारों की मदद, उनकी कल्याणकारी योजनओं के लिए धन जुटाने के लिए किया। यह भारत की पहली और एक मात्र फिल्म उद्योग का पहल है।

सहस्त्राब्दी 2000

मलयालम सिनेमा के नई सहस्त्राब्दी स्लैपस्टिक कॉमेडी और रोमांटिक कहानी का ब्लॉकबस्टर फिल्मों से शुरू हुआ। जॉन एंटनी की ***सी आई डी मूसा***, लाल जोस की ***मीश माधवन***;शशी शंकर निर्देशित ***कुंजिकूनन*** आदि। इस दशक में कई सिक्वल भी बनाया गया। इसमें हिट ***रवाणप्रभु देवासुरम*** की सिक्वल थी। 1980 का ***ओरु सी बी आई डयारिकुरिप्पू*** के सिक्वल ***सेथुरमा अय्यर सी बी आई*** और ***नेरारियां सी बी आई।*** 2001 में मलयालम फिल्म उद्योग ने ***द गार्ड*** नामक फिल्म बनाय जिस में एक ही अभिनेता था। 2006 में डिजिटल प्रारूप में शूट और वितरण किया भारतीय पहली फिल्म मलयालम की ***मुन्नामतोरल*** है। 2000 के दशक की शुरुआत में कई फिल्में निम्न गुणवत्ता की थीं। लेकिन वहां कुछ फिल्में जो अनुकरणीय फिल्म निर्माण का उदाहरण थीं, जैसे ***मेघमल्हार,***

मधुरनोम्बारकाट्टू, नंदनम, पेरुमाझक्कलम, काज़चा आदि। ब्लॉकबस्टर ***मीसा माधवन*** के बाद इस अवधि के दौरान दिलीप एक प्रमुख स्टार शक्ति के रूप में उभरे।

2010 से वर्तमान तक

कई वर्षों तक गुणवत्ता में गिरावट के बाद, मलयालम फिल्मों ने 2000 के अंत में कुछ पुनर्जागरण के संकेत देखे, जिसमें कई प्रयोगात्मक फिल्में रिलीज हुईं, जिनमें से ज्यादातर नए निर्देशकों की थीं। सलीम अहमद की पुरस्कार विजेता ड्रामा फिल्म ***'आदमिंते मकान अबू'*** को वर्ष 2011 के लिए सर्वश्रेष्ठ विदेशी फिल्म श्रेणी में नामांकन के लिए अकादमी पुरस्कारों में भारत की आधिकारिक प्रविष्टि के रूप में चुना गया है। मलयालम सिनेमा ***'आदमिंते मकान अबू'*** राजीव अंचल की '***गुरु***' के बाद सर्वश्रेष्ठ विदेशी भाषा फिल्म के लिए अकादमी पुरस्कार के लिए नामांकित होने वाली दूसरी मलयालम फिल्म है। इस पुनर्जागरण में सबसे अधिक योगदान देने वाली अन्य फिल्मों में ***ऋतु, कुट्टी सांक, भ्रमरम, पालेरी माणिक्यम: ओरु पथिरकोलापताकतिड कथा, प्रांचियेटन एंड द सेंट, उरुमी,*** शामिल हैं।, ***ट्रैफिक, गद्दामा, प्रणयम, सिटी ऑफ गॉड, मेलविलासोम, ब्यूटीफुल, ई अट्टा कलातु, 22 फीमेल कोट्टायम, "सेकंड शो", "चप्पा कुरिशु" निद्रा, डायमंड नेकलेस, मंजादिक्कुरु, आकाशतिडे निरम, स्पिरिट, उस्ताद होटल, थट्टाथिन मारायथू*** आदि। इसने पृथ्वीराज सुकुमारन, फहद फाजिल, जयसूर्या, इंद्रजीत, अनूप मेनोन, दुलकर सलमान, आसिफ अली जैसे प्रतिभाशाली अभिनेताओं को प्रोत्साहित किया। साथ लिजो जोस पेलिसरी, राजेश पिल्लई, अंजलि मेनोन,, आशिक अबू, अरुण कुमार, डॉ. बीजू आदि जैसे होनहार निर्देशकों का उदय हुआ।

इस दशक में प्रयोगात्मक कथानक, असामान्य विषय और कथन की नई तकनीकों पर आधारित "नई पीढ़ी" फ़िल्में रिलीज हुई। 2010 में सतीश कलाथिल ने ***जलाचायम*** फिल्म का निर्माण और निर्देशन किया यह मोबाइल फोन कैमरे का उपयोग करके शूट की गई दुनिया की पहली फीचर फिल्म है । 2013 में रिलीज़ हुई '***दृश्यम***' और 2016 में आई फ़िल्म ***'पुलिमुरुगन'*** क्रमशः बॉक्स ऑफ़िस पर 500 मिलियन और 1 बिलियन का आंकड़ा पार करने वाली पहली मलयालम फ़िल्म बनीं। ***दृश्यम*** को चार अन्य भारतीय भाषाओं में रीमेक किया गया। 2014 में आई फ़िल्म '***पेरुचाज़ी***' को दुनिया भर में 500 स्क्रीन पर रिलीज़ किया गया, जिससे यह मलयालम फ़िल्म उद्योग के इतिहास में सबसे बड़ी रिलीज़ बन गई।

2016 में सिद्दीक द्वारा निर्देशित '***फ़ुकरी***' के सह निर्माता जेन्सो जोस ने पहियों पर डबिंग स्टेशन बनाने का विचार पेश किया। भारतीय सिनेमा के इतिहास में पहली बार, एक कारवां में स्थापित मोबाइल डबिंग स्टूडियो में डबिंग का काम शूटिंग स्थल पर ही किया गया। इसका उपयोग कुछ पोस्ट-प्रोडक्शन कार्यों जैसे कि बुनियादी दृश्य संपादन और रंग सुधार के लिए भी किया गया था। इससे फिल्म में बेहतर गुणवत्ता आई है, क्योंकि अभिनेता अपनी आवाज़ में बिल्कुल वैसा ही एहसास ला सकते हैं जैसा उन्होंने कुछ समय पहले कैमरे के सामने किया था।

भारतीय सिनेमा के इतिहास में पहली बार 2017 में ***विलेन*** मलयालम फिल्म को पूरी तरह से 8K रिजॉल्यूशन में शूट किया गया। केरल के निपाह वायरस पर आधारित 2018 की फिल्म ***वायरस*** भारत में पहली मेडिकल थीम वाली फिल्म के रूप में जाना जाता है। 2019 में अभिनेता से निर्देशक बने पृथ्वीराज की ***लूसिफर*** ने रिलीज के चार दिनों में 50 करोड़ रुपये, आठवें दिन 100 करोड़ रुपये और 21 दिन 150 करोड़ रुपये कमाए| इस महत्वपूर्ण उपलब्धि तक पहुँचने वाले तेज और सब से ज्यादा कमाई करनेवाली मलयालम फिल्म बन गई। यह एनामॉर्फिक लेंस का उपयोग करके पूरी तरह से शूट की गई पहली भारतीय फ़िल्म थी। 2019 में निर्देशक-निर्माता वैशाख पी सुब्रमणियम के पोते ने मेरीलैंड स्टूडियो को फ़िल्म निर्माण का गौरव वापस दिलाने के प्रयास में ***लव, एक्शन ड्रामा*** नामक फिल्म निर्माण किया।

कोविड-19 महामारी के दौरान दुनिया भर में कुछ चीजें आम थीं- हम सभी लॉकडाउन में चले गए। सबसे बड़ी बात यह कि हमने स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर बहुत सारी फिल्में देखीं। इन डिजिटल प्लेटफोर्म ने सस्ते कीमत पर नए फिल्में दर्शकों को उपलब्ध कराया। इस प्लेटफोर्म को ओटीटी नाम से जानने लगे। इनमें सबसे बड़े नाम अमेज़न प्राइम और नेटफ्लिक्स हैं। इन प्लेटफॉर्म ने पूरी दुनिया को ढेर सारा कंटेंट उपलब्ध कराया । डिजिटल प्लेटफोर्म का उदय एक क्रांतिकारी बदलाव है। यह बदलाव फिल्मों को देखने की तरीखा पूरी तरह बदल लिया। डिजिटल प्लेटफोर्म में बढ़िया सबटाईटलिंग और ऑडियो विकल्पों से भाषा बाध्य नहीं रहा।
डिजिटल प्लेटफोर्म से मलयालम फिल्म को वाकई फायदा मिला। सिनेमा प्रेमियों ने लोकप्रिय फिल्में देखा और महामारी के दौरान रिलीज़ हुई फिल्में भी देखे।

2020 शुरुआत में रिलीज हुई फ़िल्मों ने बॉक्स ऑफ़िस पर बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है, समीक्षकों से भी काफ़ी प्रशंसा अर्जित की है। ***अंज्जाम पथिरा*** और ***एयप्पन्म कोशियुम*** साल की सबसे बड़ी हिट फ़िल्म है। ***शाइलॉक, वरने आवश्यामुंड, कप्पेला सी यू सून*** भी हिट फिल्में थी। आज मलयालम सिनेमा में ऐसी अनोखी और प्रामाणिक कहानियाँ कहने का साहस है जो पहले कभी नहीं कही गई। निर्देशक लिजो जोस पेलिसरी की '***जल्लीकेट्टू***' (2020) इस का बेहतरीन उदाहरण है। बिना किसी स्टार-स्टडेड कास्ट के और कम बजट के साथ निर्मित, इस फिल्म में बेहतरीन तकनीकी कौशल और भावनात्मक शक्ति थी। यह भारत की आधिकारिक ऑस्कर प्रस्तुति बन गई।

मलयालम फिल्में हमेशा वास्तविकता के करीब रही हैं| नया फिल्म निर्माताओं का समूह साहसपूर्वक समकालीन विषयों और विचारों को उठा रहा है। दर्शकों को असहज सच्चाइयों का सामना करने की चुनौती दे रहा है। 2021 के हिट फिल्में ***द ग्रेट इंडियन किचन, दृश्यम 2,नयाट्टू, कुरुथी, #होम*** आदि।

2022 मलयालम सिनेमा के लिए एक महत्वपूर्ण वर्ष था क्योंकि राज्य में सिनेमाघरों ने 2020 की शुरुआत में COVID-19 के प्रकोप के बाद से पूरी क्षमता से काम करना शुरू कर दिया था। फिल्म बिरादरी ने राहत की सांस ली जब दर्शकों ने लॉकडाउन की उदासी को दूर करते हुए फिल्मों की ओर वापसी की।

मलयालम सिनेमा लगातार बेहतरीन कंटेंट का निर्माण करते आगे बढ़ता रहा। फिल्मों को अंतर्राष्ट्रीय फेस्टिवल में पहचान मिलती रही। मलयालम सिनेमा ने भारतीय सिनेमा के अंडरडॉग बनने से इनकार करते हुए, आविष्कारशील और प्रयोगात्मक फिल्मों के साथ लोकप्रिय कल्पना को आकर्षित किया। 2022 मलयालम सिनेमा के लिए मिला-जुला साल रहा, जिसमें कुछ बेहतरीन प्रयास और कुछ बड़ी निराशाएँ थीं। फिल्म निर्माताओं और लेखकों ने नए और समकालीन विषयों और तकनीकों की खोज की, जिन्हें अन्य भाषा फिल्म उद्योग छूने से इनकार करते हैं। मलयालम सिनेमा पूरे भारत के दर्शकों को आकर्षित करना जारी रखता है क्योंकि यह मानवीय स्थिति, वास्तविकता पर आधारित पात्रों की शानदार खोज के साथ साहसपूर्वक प्रयोग करता है, और पितृसत्ता, राजनीति और जाति से जुड़े सांस्कृतिक रूप से निहित रोजमर्रा के मुद्दों को बेबाकी से संबोधित करता है। ममूटी, कुंचाको बोबन और टोविनो थॉमस ने विविधता और स्क्रिप्ट नवीनता के साथ विविध पात्र जीता। वहीं, दर्शन राजेंद्रन, रेवती, ग्रेस एंटनी और बिंदु पनिकर ने अपने अभिनय से धमाल मचा दिया। इस वर्ष बॉक्स ऑफिस पर कई हिट और समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्में देखी गईं। वर्ष की कुछ ब्लॉकबस्टर हिट हैं ***ललितम सुंदरम, अंताक्षरी, सैल्यूट, ब्रो डैडी, 12वां मैन***। पुरस्कार विजेताओं में ***सीबीआई 5: द ब्रेन, कडुवा, हृदयम, भीष्म पर्वम*** शामिल हैं।

मलयालम फिल्म उद्योग के लिए 2023 साल शानदार रहा है| जिसमें कई हिट और ब्लॉकबस्टर फिल्में सामने आई हैं। आकर्षक कहानियों से लेकर नई कहानी, कई छोटे बजट और बड़े बैनर की फिल्मों ने स्थानीय और वैश्विक स्तर पर दर्शकों को आकर्षित किया है। उन्होंने न केवल मनोरंजन किया , बल्कि रचनात्मक सीमाओं को भी आगे बढ़ाते उद्योग के भीतर प्रतिभा की गहराई और विविधता को प्रदर्शित किया है। ममूटी की ***कातल द कोर'*** सिनेमाघरों में रिलीज हुई हिट मलयालम फिल्मों में से एक है। जियो बेबी द्वारा निर्देशित यह फिल्म समलैंगिकता के विषय पर साहसपूर्वक चर्चा करती है, तथा सामाजिक वर्जनाओं को चुनौती देती है। इस शानदार कलाकार दल में तमिल अभिनेत्री ज्योतिका ने भी ममूटी के साथ महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नवागत निर्देशक निथिश सहदेव द्वारा निर्देशित '***फालिमी*** एक अव्यवस्थित परिवार की वाराणसी की यात्रा पर केंद्रित है। फिल्म में बेसिल जोसेफ, मंजू पिल्लई और जगदीश प्रमुख भूमिकाओं में हैं। ***कन्नूर स्क्वाड*** भी इस साल की सबसे ज़्यादा कमाई करने वाली फ़िल्मों में से एक है। रॉबी वर्गीस राज द्वारा निर्देशित और ममूटी कॉम्पनी के बैनर ममूटी द्वारा निर्मित इस फ़िल्म में ममूटी, रोनी डेविड राज, अज़ीज़ नेदुमंगद, शबरीश वर्मा, किशोर और विजयराघवन ने मुख्य भूमिकाएँ निभाई हैं। एक्शन एंटरटेनर के तौर पर बनी "***आर डी एक्स***" ने मलयालम सिनेमा में ऐतिहासिक उपलब्धि स्थापित किया। रिकॉर्ड तोड़ते हुए, फिल्म ने

केरल बॉक्स ऑफिस पर 50 करोड़ की कमाई की, यह उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने वाली दूसरी गैर-सुपरस्टार मलयालम फिल्म बन गई। नवागंतुक नाहास हिदायत द्वारा निर्देशित "***आर डी एक्स***" में शेन निगम, एंटनी वर्गीस और नीरज माधव मुख्य भूमिकाओं में हैं। जीतू माधवन के निर्देशन में बनी फिल्म '***रोमांचम***' ने बॉक्स ऑफिस पर गहरा प्रभाव डाला। फिल्म ने रिलीज के 23 दिनों के भीतर ही 50 करोड़ क्लब में प्रवेश कर लिया, जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। 2018 में हुए बाढ़ के विषय पर बने ***2018*** फिल्म 200 करोड़ क्लब में शामिल होने वाली पहली मलयालम फिल्म बनी। रिलीज़ हुई नौवें दिन अकेले केरल से ही लगभग 5.18 करोड़ रुपये कमाए, जो मॉलीवुड के इतिहास में अब तक का सबसे बड़ा रिकॉर्ड है। इस फिल्म का निर्देशन जूड एंटनी जोसेफ ने किया था। इसमें टोविनो थॉमस मुख्य भूमिका में हैं, साथ ही कुंचाको बोबन, आसिफ अली, विनीत श्रीनिवासन, लाल, अपर्णा बालमुरली, कलैयारासन और नारायण जैसे कलाकार भी हैं।

जैसे-जैसे 2024 खत्म होने वाला है, कई मलयालम फ़िल्में ज़रूर देखने लायक सिनेमाई रत्न बनकर उभरी हैं, जो इंडस्ट्री की विविधतापूर्ण कहानी और प्रतिभा को दर्शाती हैं। जटिल मानवीय भावनाओं और सामाजिक मुद्दों को तलाशने वाले गहन नाटकों से लेकर सस्पेंस और ट्विस्ट से भरी मनोरंजक थ्रिलर तक, ये फ़िल्में अपनी अनूठी कहानियों से दर्शकों को लुभाने का वादा करती हैं। दर्शकों को दोस्ती और परिवार की दिल को छू लेने वाली कहानियों के साथ-साथ मनोरंजक एक्शन सीक्वेंस भी देखने को मिल सकते हैं । दमदार अभिनय और बेहतरीन निर्देशन के साथ, ये फ़िल्में साल को शानदार तरीके से खत्म करने का एक बेहतरीन तरीका हैं। 2024 में अब तक मलयालम बॉक्स ऑफ़िस 2023 की तुलना में अपने हिस्से को तीन गुना करने में कामयाब रहा है। इस नाटकीय वृद्धि का कारण 2024 में मलयालम बॉक्स ऑफ़िस का शैली-स्तर पर विभाजन इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे अलग-अलग और विविध फ़िल्में दर्शकों का ध्यान खींचने में कामयाब रही हैं। वर्ष की अब तक की शीर्ष मलयालम फिल्में विभिन्न शैलियों से संबंधित हैं, जिनमें ***मंजुम्मेल बॉयज़ (एडवेंचर/ ट्रू स्टोरी), आदुजीविथम - द गोट लाइफ (एडवेंचर), प्रेमालु (रोमांस), आवेशम (एक्शन), वर्षांगलक्कु शेषम (ड्रामा),*** **और** ***ब्रह्मयुगम (हॉरर)***, शामिल हैं। 2024 में मलयालम सिनेमा में विविधता की प्रवृत्ति पर प्रकाश डालता है।

विकसित दर्शकों में अक्सर सांस्कृतिक और सामाजिक जागरूकता का उच्च स्तर होता है, जो उन्हें प्रासंगिक सामाजिक मुद्दों, सांस्कृतिक बारीकियों और ऐतिहासिक संदर्भों को संबोधित करने वाली फिल्मों के प्रति अधिक ग्रहणशील बनाता है। नतीजतन, मलयालम सिनेमा अक्सर राजनीति, लिंग और वर्ग संघर्ष जैसे विषयों पर प्रामाणिकता के स्तर के साथ आगे बढ़ता है। विकसित दर्शक उन कथाओं से भी बेहतर तरीके से जुड़ सकते हैं जो सामाजिक मानदंडों को चुनौती देते हैं, और वास्तविक जीवन के नायकों पर विश्वास करते हैं, जैसे कि द ग्रेट इंडियन किचन, 2018, या मंजुमेल बॉयज़ के मामले में।

मलयालम सिनेमा का प्रक्षेपवक्र स्वाभाविक रूप से वित्तीय बाधाओं से जुड़ा हुआ है, मुख्य रूप से मलयालम फिल्मों के सीमित थिएटर प्रदर्शन से उपजा है। हिंदी और अन्य दक्षिण भारतीय उद्योगों के अपने समकक्षों के विपरीत, मलयालम फिल्म निर्माताओं को केरल के बाहर छोटे राजस्व बाजार के आकार के कारण रसद और बजटीय प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा।

निष्कर्ष

भारतीय सिनेमा की विविधतापूर्ण और समृद्ध विरासत के भीतर, मलयालम फिल्म उद्योग केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और साहित्यिक कौशल का एक प्रमाण है। जबकि साक्षरता ने राज्य में फिल्म दर्शकों के स्वाद और वरीयताओं को आकार देने के लिए आधार तैयार किया हो सकता है, कई अन्य प्रभाव (स्ट्रीमिंग प्लेटफ़ॉर्म के उदय सहित) आगे चलकर उद्योग के प्रदर्शन में भूमिका निभाते रहेंगे। जैसे-जैसे मलयालम सिनेमा को पहचान और सराहना मिल रही है, यह स्पष्ट है कि इसकी सफलता फिल्म निर्माताओं और कलाकारों के जुनून, रचनात्मकता और समर्पण का परिणाम है। अपनी कहानी और यथार्थवाद से दर्शकों को लुभाने की अपनी क्षमता के साथ, मलयालम सिनेमा आने वाले वर्षों में और भी अधिक प्रभाव डालने के लिए तैयार है।

जैसे-जैसे फिल्म उद्योग विकसित होता जा रहा है, एक बात स्पष्ट है: केरल में, कंटेंट हमेशा राजा रहेगा।

संदर्भ सूची

1. केरल संस्कृति- सिनेमा www.keralaculture.org/cinema
2. मलयालम सिनेमा का इतिहास - के सी सबरीना बशीर- एकेडमिया 2019
3. सिनेमा का इतिहास - मलयालम - केरला
4. The Rise of Malayalam Cinema : Insights from Industry experts - Abhishek S Chauhan 2024
5. Official Website of AmmA, Cinema History, Ammakerala.com

श्रीमती शीजा.एस
सहायक प्रोफेसर हिंदी, भाषा विभाग
E-mail: ssheeja2020@gmail.com Mobile 9902782428